भारत एक अत्यंत प्राचीन और महान देश है जिसकी संस्कृति और सभ्यता पूरी दुनिया में सबसे अनूठी और गौरवशाली मानी जाती है। हमारी भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी और खास बात यह है कि यहां अनेकता में भी एकता देखने को मिलती है। हमारे देश में अलग अलग धर्मों जातियों और भाषाओं के लोग एक साथ बहुत ही प्यार और भाईचारे के साथ मिलजुलकर रहते हैं। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत भूमि का हर एक कोना अपनी एक अलग और विशेष पहचान रखता है लेकिन फिर भी हम सब एक मजबूत धागे में बंधे हुए हैं जिसे हम भारतीयता कहते हैं। हमारे देश को त्योहारों का देश भी कहा जाता है क्योंकि यहां पूरे साल कोई न कोई त्योहार बहुत ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। दीपावली होली ईद क्रिसमस गुरुपर्व और पोंगल जैसे अनेक त्योहार हमें आपस में खुशियां बांटने और एक दूसरे के करीब आने का एक बहुत ही सुंदर अवसर प्रदान करते हैं। इन त्योहारों के समय पूरे देश में एक अलग ही रौनक और चमक देखने को मिलती है। घरों को बहुत ही सुंदरता के साथ सजाया जाता है और तरह तरह के स्वादिष्ट पकवान और मिठाइयां बनाई जाती हैं। त्योहारों के बहाने सभी रिश्तेदार और दोस्त एक जगह पर इकट्ठा होते हैं जिससे हमारे आपसी रिश्ते और भी ज्यादा गहरे और मजबूत बन जाते हैं। हमारे ये त्योहार हमें बुराई पर अच्छाई की जीत और सत्य के मार्ग पर चलने की बहुत ही बड़ी सीख देते हैं। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की एक बहुत ही पुरानी और मजबूत परंपरा रही है जहां दादा दादी माता पिता और बच्चे सभी एक ही छत के नीचे एक साथ रहते हैं। इस तरह के परिवार में बच्चों को अपने बड़ों का प्यार और उनका आशीर्वाद हमेशा मिलता रहता है। बड़े बुजुर्गों के पास जीवन का जो एक बहुत बड़ा और कीमती अनुभव होता है वह युवा पीढ़ी के लिए एक सच्चे मार्गदर्शक का काम करता है। संयुक्त परिवार में रहते हुए बच्चे बहुत ही आसानी से एक दूसरे की मदद करना त्याग करना और बड़ों का आदर सम्मान करना जैसी अच्छी आदतें सीख जाते हैं। लेकिन आज की इस तेजी से भागती हुई आधुनिक दुनिया में लोगों के सोचने और रहने के तरीके में बहुत ही बड़े बदलाव आ रहे हैं। काम और रोजगार की तलाश में लोग अब अपने गांवों और कस्बों को छोड़कर बड़े बड़े शहरों की तरफ जा रहे हैं जिसके कारण हमारे संयुक्त परिवार अब धीरे धीरे छोटे और एकल परिवारों में टूटते जा रहे हैं। शहरों की इस भीड़भाड़ और व्यस्त जिंदगी में इंसान इतना ज्यादा खो गया है कि उसके पास अपने ही रिश्तेदारों और पड़ोसियों से बात करने तक का समय बिल्कुल नहीं बचा है। पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के कारण आज की युवा पीढ़ी धीरे धीरे अपनी जड़ों और अपनी प्राचीन संस्कृति से दूर होती जा रही है। लोग अपनी मातृभाषा बोलने में शर्म महसूस करने लगे हैं और विदेशी पहनावे तथा विदेशी संगीत को बहुत ज्यादा अपना रहे हैं। भारत हमेशा से ही कला साहित्य और संगीत के क्षेत्र में पूरी दुनिया का सिरमौर रहा है। हमारे देश के प्राचीन मंदिर किले और महल हमारी शानदार वास्तुकला का एक बहुत ही जीता जागता उदाहरण हैं जिन्हें देखने के लिए दुनिया भर से लाखों लोग हर साल भारत आते हैं। हमारे देश के पुराने ग्रंथ और वेद पूरी मानव जाति को शांति और ज्ञान का संदेश देते हैं।